

SAMVARDHINI :- 30/07/2024

Volume – 6

Issue – 1

(ISSN ONLINE:- 2583-7176)

<https://samvardhini.in>**जया टण्डन,**शोधाध्येत्री अनुवादिका,
संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान,
नई दिल्ली

दूरवाणी- 9891924833

Email-jaya.tan72@gmail.com

शिशुओं की प्रारम्भिक देखभाल एवं शिक्षा के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

शोधसार:**लेखिका
जया टण्डन**

प्रायः एक सहस्राब्दी तक बहुविध आक्रमण की मार झेलते भारत की समृद्ध शैक्षिक परम्पराएँ, विशेष रूप से शिशु की प्रारम्भिक शिक्षा की उन्नत मनोवैज्ञानिक परम्परा लुप्तप्राय हो चली हैं। समाज के सदस्य के रूप में हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम उन परम्पराओं को पुनर्जीवित करें जिसने अतीत में, सर्वविध समृद्ध भारत की ओर समूचे विश्व को आकर्षित किया था। किसी भी परम्परा का विकास क्रोड में खेलने वाले शिशु में उसके बीजारोपण के द्वारा ही किया जा सकता है। वर्षों के शिक्षण व अनुभव-जन्य ज्ञान पर आधारित यह लेख भारतीय वाङ्मय के आलोक में लिखा गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा के ये तथ्य आज भी प्रासंगिक हैं एवम् उन्नयन के विराट राजमार्ग के द्वार खोलते हैं।

अतीत से वर्तमान तक

सम्पूर्ण प्राणी जगत् के अस्तित्व का आधार है नवजीवन का उदय। प्रकृति के समस्त जीव-जन्तुओं के लिए अपने नव प्रस्फुटित अंकुर की समुचित देखभाल, उनका प्राथमिक व सर्वाधिक महत्वपूर्ण दायित्व होता है। बौद्धिक रूप से विकसित मनुष्य भी प्रकृति के इस नियम से बंधा अपने शिशुओं के कल्याण में नित्य प्रयासरत रहता है। मानव सभ्यता के इतिहास के अध्ययन से एक विषय तो स्पष्ट है कि विश्व के प्रत्येक भाग में विकसित होने वाली सभ्यताएँ अपने पारिस्थितिक तन्त्र के साथ सामञ्जस्य स्थापित करते हुए ही विकसित हुई थीं। उनका निवास, आहार-विहार, सांस्कृतिक विकास, आदि भौगोलिकता से सुसम्बद्ध रहा। किसी एक सभ्यता को समूचे विश्व के लिए सर्वविध आदर्श व्यवस्था के रूप में स्वीकार कर के तदनुसार व्यवहार करना मानव जीवन की जटिलताओं को बढ़ाने वाला ही सिद्ध हुआ।

मध्य युग के यूरोपीय वर्चस्व-काल में, आङ्ग्ल सभ्यता के प्रभाव के कारण, बौद्धिक रूप से विकसित भारत में युग परिवर्तन का पदार्पण हुआ। परतंत्र भारत, पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी ज्ञान परम्परा को विस्मृत कर देने को विवश हो गया और तब जनमानस शनैः-शनैः कुण्ठाग्रस्त-सा दिखने लगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साठ-सत्तर वर्षों के पश्चात् भी आङ्ग्ल सरकार की शिक्षा पद्धति को स्वीकार करने के परिणामस्वरूप भारत की मौलिक विचार-धारा, जीवन-पद्धति एवं मान्यताएँ अपनी जड़ों से हिलने लगीं। भारतीयों का शिक्षण, देश के मौलिक स्वरूप को सहेजते हुए देशवासियों के हित के लिए ही होना चाहिए जिसे वे सहजता के साथ आत्मसात् कर सकें। हमारी “राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020” इसी दृष्टि से एक सशक्त प्रयास है। इस शिक्षा नीति के आलोक में आत्मविश्वास से दमकता हुआ भारत का शिक्षित युवा वैश्विक प्रगति के साथ तारतम्य बैठाते हुए अपनी गौरवमयी ज्ञान परम्परा का संवाहक बने यह अपेक्षा है। वह परम्परा, जो सदियों से विस्मृत कर दी गई किंतु जिसके तथ्यों के कणांश आज भी लोक-जीवन में जुगनू के समान चमक कर लुप्त हो जाते हैं। उन सभी तथ्यों को उजागर कर के ज्ञान के सूर्य को ग्रहण काल से बाहर निकालने के दायित्व के निर्वहन हेतु भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० का निर्माण किया गया है।

शिशु एवं शिक्षा -

हमारा विषय है- शिशुओं की प्रारम्भिक देखभाल और शिक्षा। इस सन्दर्भ में ‘शिशु कौन है’ व ‘शिक्षा क्या है’ इन दो प्रश्नों के उत्तर के रूप में कहा जा सकता है कि शिशु वह है जो संसार में आकर नित्य नव-अनुभवों से सीखता है एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास करता रहता है। अपने विचारों को प्रकट कर सकने की क्षमता के साथ ही शैशवावस्था परिपक्व होती बाल्यावस्था का स्वरूप लेने लगती है। वस्तुतः शिशु की देखभाल का क्रम उसके गर्भ में आने के साथ ही आरम्भ हो जाता है, जिसे आधुनिक विज्ञान की भाषा में **Pre Natal care** का नाम दिया गया है। जन्म के पश्चात् शिशु की देखभाल अर्थात् **Post Natal Care** का कार्य बालक के प्रायः पाँच वर्ष की आयु का हो जाने तक अत्यन्त सावधानीपूर्वक निर्वहन किया जाने वाला दायित्व है, जैसा कि भारतीय परम्परा में भी कहा गया है- “लालयेत् पञ्च वर्षाणि।”¹

¹ चाणक्यनीतिः, अनुवादक-शास्त्री सत्यव्रत, भारतीय विद्या मन्दिर, कलकत्ता, २०१३, तृतीय अध्याय, श्लोक-१८

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की ‘शिक्ष्’ धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है ‘सीखना’। शिक्षा शास्त्र के अनुसार शिक्षा की अनेक तथ्यपरक परिभाषाएँ हैं, किन्तु विषयानुसार यहाँ कहा जा सकता है कि शिक्षा बौद्धिक विकास का वह सोपान है, जिसपर चढ़ते हुए मनुष्य के चरित्र का निर्माण व विकास होता है।

शिशु का मानसिक विकास -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिचय में ही लिखा गया है कि – “बच्चे को जो कुछ सिखाया जा रहा है, उसे तो सीखे ही और साथ ही वे सतत सीखते रहने की कला भी सीखें”² भारतीय वाङ्मय की इसी आशय की उक्ति है- “स्वाध्यायान्मा प्रमदः”³ अर्थात् स्वयं सीखते रहने का क्रम अनवरत चलता रहे। प्रत्येक बालक के जिज्ञासा और सीखने की क्षमता का स्तर भी भिन्न होता है। भारतीय परम्परा में शिक्षण की व्यवस्था मात्र आयु पर निर्भर न होकर बालक की योग्यता पर आधारित थी। इस दृष्टि से उत्कृष्ट दृष्टान्त के रूप में नचिकेता के प्रश्न और यमराज के उत्तर कठोपनिषद् में संगृहीत हैं। दो वरदान प्राप्त कर के तीसरे वरदान के रूप में आत्म-रहस्य के प्रति जिज्ञासु नचिकेता को विविध प्रलोभनों द्वारा ज्ञान-मार्ग से हटाने का प्रयास करते यमराज से नचिकेता कहता है-

श्रोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।

अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव बाहास्तव नृत्यगाते॥१।१।२६॥⁴

सांसारिक भोगों को नश्वर एवम् इन्द्रियों के तेज को क्षीण करने वाला बताते हुए, ज्ञान के प्रति ही निष्ठा दिखाने पर नचिकेता से प्रसन्न होते हुए यमराज ने कहा –

विद्याभीप्सिनं नचिकेतसं मन्ये न त्वा कामा बहवोऽलोलुपन्त॥१।२।४॥⁵

तब विद्याभिलाषी एवं भौतिक सुखों के प्रति निर्लोलुप नचिकेता को यमराज ने परम गुह्य ज्ञान प्रदान किया। शैक्षिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति का विकास, भारतीय परम्परा का वैशिष्ट्य रहा है।

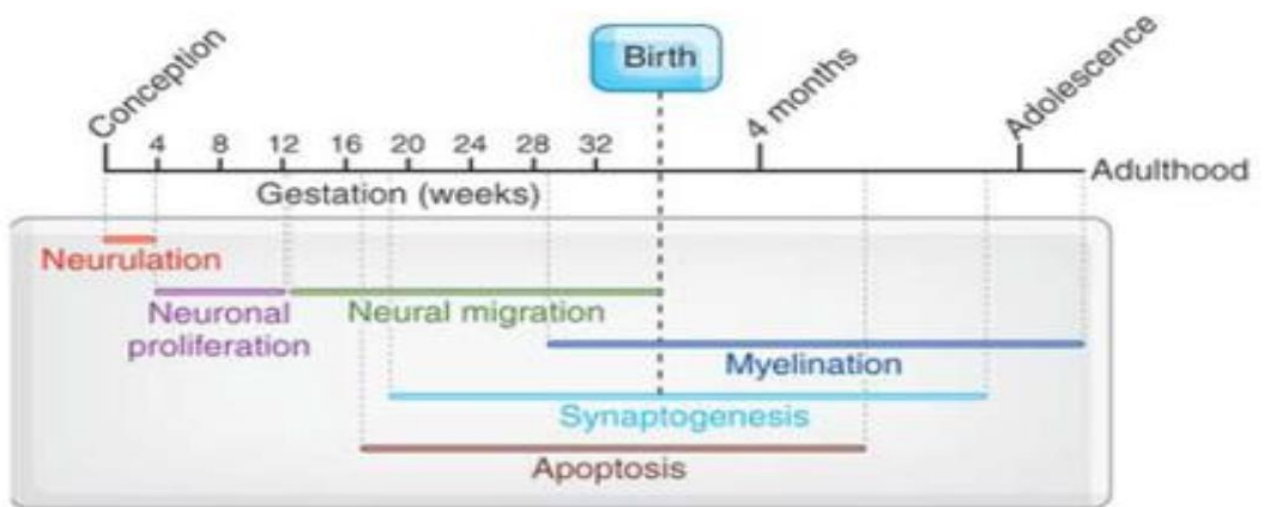
²https://www.mhrdeducation.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf (19 JULY 2024) Pg-4

³ तैत्तिरीयोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, पुनर्मुद्रण संस्करण, संवत्-२०७४, शिक्षा वल्ली, ११ अनुवाक, प्रथम मन्त्र, पृ०-१४२

⁴ कठोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, छठा संस्करण, संवत्-२००८

⁵ ibid

शिक्षा नीति के नव शैक्षणिक ढाँचे में बुनियादी स्तर को दो भागों में विभक्त किया गया है – प्रथम स्तर बालक की तीन से छः वर्ष तक की आयु का और द्वितीय स्तर छः से आठ वर्ष तक की आयु का। शिक्षा नीति का प्रथम अध्याय है- “प्रारम्भिक देखभाल और शिक्षा”। पहले अनुच्छेद में स्पष्ट किया गया है कि बच्चों के मस्तिष्क के ८५% का विकास छः वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। मानव के शारीरिक-मानसिक विकास का अनेक स्तरों पर अध्ययन एवं वैज्ञानिक शोधों के द्वारा यह स्थापित किया जा चुका है कि मस्तिष्क का अधिकतम विकास बाल्यावस्था में ही हो जाता है। अधः प्रदत्त चित्र में मानव-मस्तिष्क के विकास के विविध चरणों को सूचीबद्ध कर दिखाया गया है⁶-



उपर्युक्त चित्र मनुष्य के जन्म के पूर्व व जन्म के पश्चात् होने वाले उसके मस्तिष्क के तीव्र विकास के क्रम को दिखा रहा है। एक अन्य अध्ययन में कहा गया है कि - एक वयस्क की तुलना में दो वर्ष के शिशु का शारीरिक वजन कुल ६% ही होता है किन्तु दो वर्षीय शिशु के मस्तिष्क का वजन एक वयस्क के मस्तिष्क की तुलना में २५% होता है।⁷ मस्तिष्क की क्षमताओं व विकास के अध्ययन के क्रम में, ३० वर्षों तक किए गए एक सघन शोध के निष्कर्ष में लिखा गया है कि मानव के मस्तिष्क की मौलिक संरचना का विकास गर्भावस्था व जन्म के आरंभ के वर्षों में हो जाता है। मस्तिष्क के विकास का आरंभ ही भविष्य के लिए नींव का कार्य करता है, जिसके आधार पर बालक में बोलना, समझना, निर्णय लेना आदि क्षमताएँ विकसित होती हैं।⁸ अतः शिक्षा की उच्च गुणवत्ता के लिए जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में शिशु की समुचित देखभाल सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि **शिक्षा नीति-2020** के प्रथम अध्याय के तृतीय अनुच्छेद में प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए एक उत्कृष्ट पाठ्यक्रम व शैक्षणिक ढाँचा विकसित करने की योजना

⁶ https://en.m.wikipedia.org/wiki/Human_brain_development_timeline# (June 12, 2024)

⁷ <https://testbook.com/question-answer/maximum-development-of-brain-occur-at-6> (June 12, 2024)

⁸ <https://ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC> (June 12, 2024)

है जिसमें 0 से 3 वर्ष के बच्चों के लिए भी **Sub-framework** का विकास करने की बात कही गई है।

शिशु का समुचित बौद्धिक व नैतिक विकास -

शिशु को सिखाने के लिए विविध गतिविधियों जैसे- संगीत, नृत्य, सहभोज इत्यादि तथा क्रीडा व अन्वेषण आधारित शिक्षा पद्धति को सम्मिलित करना बहुलाभप्रद सिद्ध हो सकता है। तार्किक क्षमता विकसित करने के लिए शिशु को घर में ही खेल-खेल में बहुत कुछ सिखाया जा सकता है। जैसे- पानी की बोतल का ढक्कन खोलकर बच्चे को दें और ४-५ अन्य माप के ढक्कन भी देकर बच्चे को बोतल बंद करने को कहें। कटोरी में छोले-राजमे को मिलाकर रख दें और बच्चे को छाँटने को कहें। समस्या के समाधान हेतु चुन्नी में लगी इकहरी गाँठ खोलना, विभिन्न आकार की कटोरियों को एक के अंदर एक डालकर रखना जैसी गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं जिनका स्तर समय के साथ बढ़ाया जा सके। इन सभी क्रिया-कलापों के मध्य शिशु का गणना सीखना भी सरल हो जाता है। शिशु की किसी वस्तु को छुपाकर या किसी छुपे पारिवारिक सदस्य को खोजने के लिए कहा जाए और उसके पश्चात् छुपने के स्थल पर बच्चे ने क्या-क्या देखा यह पूछा जाए। इससे अन्वेषणात्मक व अवलोकनात्मक क्षमता की वृद्धि होगी। वृक्ष से फल नीचे गिरा, सूर्य धीरे-धीरे ऊपर आया, घास छोटी, वृक्ष बड़े दिशाओं व आकार आदि की समझ व आस-पास के दृश्यों पर आधारित प्रश्नों को पूछने से बालक की व्यवहारिकता विकसित होती है। वर्षा होने पर खिड़की पर खड़े कर के बच्चे से पूछा जाए कि वह क्या-क्या देख रहा है- पक्षी, वृक्ष, मार्ग, बूँदें आदि जिससे वह प्रकृति के विविध स्वरूपों से परिचित होने के साथ ही वातावरण के परिवर्तन को समझते हुए प्रकृति से प्रेम करना सीख सके। मानवीय संवेदनाओं से युक्त संतान को करुण-हृदय व परोपकारी बनाना हो तो कभी अनजाने में गिरने अथवा चोट लगने पर, जिससे आघात लगा हो उसे मारना न सिखाएँ। इस प्रकार तो जाने अनजाने हम बालक में बदला लेने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहे होते हैं। इसके विपरीत शिशु से कहें – “देखो तो उसे भी चोट लग गई होगी।” बालक अपनी पीड़ा को भूलकर दूसरे के कष्ट पर ध्यान देना सीखेगा। घरेलू सहायकों के प्रति सद्व्यवहार और उनकी पीड़ा को भी अपनी पीड़ा के समान समझना, भोज्य पदार्थों आदि का उपभोग मिलकर करना जैसी सहृदयता न केवल बालक अपितु भविष्य में समाज के लिए भी उपकारिणी सिद्ध होती है। परिवार के वरिष्ठ जनों एवं शिक्षकों का सम्मान करना, दिनचर्या के पालन का प्रयास, सत्य बोलना, परवस्तु के प्रति आकर्षण न रखना, अनजाने में भूल हो जाने पर छुपाने के स्थान पर स्वयं ही बताकर क्षमा माँग लेना जैसे शिष्टाचार, नैतिकता व अच्छे व्यवहार शैशवावस्था में ही विकसित किए जा सकते हैं जो जीवन पर्यन्त बने रहते

हैं। पुस्तकों से ज्ञान मिलता है अतः उन्हें सावधानीपूर्वक रखें, हाथ धोकर भोजन स्वच्छता पूर्वक थाली से बिना गिराए करें और थाली के अन्न को व्यर्थ न जाने दें, भोजन के पश्चात् कुल्ला करें व भोजन पात्र को सही स्थान पर रखे, सार्वजनिक स्थलों, नदी आदि को अवकर अर्थात् व्यर्थ की वस्तुओं से दूषित न करें जैसे व्यक्तिगत व सार्वजनिक स्वच्छता का बोध कराने वाले एवं शौचादि से संबन्धित आचरणों को सिखाना भी अत्यावश्यक है। जैसा कि महाराज मनु ने भी कहा है –

नाप्सु मूत्रपुरीषं वा ष्ठीवनं वा समुत्सृजेत्।⁹

समूह में खेलना और व्यर्थ के विवाद से बचना शिशु के भविष्य के सामाजिक व्यवहार की उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य है। यह पृथ्वी मनुष्य मात्र की नहीं है और न ही इस धरा पर उपस्थित सभी प्राकृतिक उपादान व जीव-जन्तु मनुष्य के उपभोग के लिए बने हैं। वस्तुतः बुद्धिमान् प्राणी होने के कारण मनुष्यों का पृथ्वी के प्रति सर्वाधिक दायित्व है जिसके लिए वेद कहते हैं –

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः॥¹⁰

अतः समूह में जीना सिखाने के क्रम में शिशुओं को यह भी सिखाना परमावश्यक हो गया है कि वह मानव समूह ही नहीं अपितु समस्त जीव-समुदाय के साथ मिलकर कैसे रह सकता है। यह शिक्षण आने वाले समय में पृथ्वी को विनाश से बचाने में सहायक सिद्ध होगा। विशेष रूप से हम भारतीयों के पूर्वजों ने तो मानव की शान्ति व सुख-समृद्धि से पूर्व समस्त विश्व की शान्ति की कामना की जब उन्होंने कहा- “ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः। सामा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥¹¹

उत्तम शिक्षा के लिए स्वास्थ्य का महत्त्व भी समझना अत्यावश्यक है जिसकी नींव शैशवावस्था से ही डाल दी जाए तो शारीरिक-भौतिक विकास की ओर शिशु का रुझान बनाया जा सकता है। परम्परागत क्रीडाओं को बढ़ावा देने के लिए स्पर्धा का आयोजन किया जा सकता है। जैसे- लट्टू नचाने की कला से सन्तुलन बनाने व ऊंगलियों के तीव्र चालन की क्षमता विकसित होती है, कबड्डी जैसे खेल मनोरंजन के माध्यम से व्यायाम के समान ही सुदृढ़ शरीर के निर्माण में सक्षम हैं। शिशुओं का बाह्य खेलों में सम्मिलित होना उनके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध

⁹ मनुस्मृति (कल्याण कल्पतरु) 4-56, गीताप्रेस गोरखपुर, १९९९, पृष्ठ-१०७

¹⁰ अथर्ववेद, पृथ्वीसूक्त, १२-१

¹¹ यजुर्वेद, ३६-१७

होता है। जिस देश में हम जन्मे, पले-बढ़े उस देश की सांस्कृतिक विरासत को संभालने का शिक्षण भी शैशवावस्था से ही आरम्भ किया जाए तो भविष्य में देश के लिए उत्तम नागरिकों के समूह का निर्माण हो सकेगा।

भाषा-शिक्षण व साक्षरता

भाषा-शिक्षण व साक्षरता हेतु नवोन्मेषी विचारों को प्रोत्साहन देना होगा। प्रत्येक शिशु भिन्न है और उसके सिखने की क्षमता भी अलग है। कोई अपने परिजनों के बहुत निकट है तो किसी को भोजन में रुचि है। अक्षर परिचय कराना हो तो आवश्यक नहीं की म से मछली ही हो! बालक की समझ विकसित करने के लिए उसके रुचि के शब्द बोले जाएं म से ‘माँ’ या ‘मक्खन’ इत्यादि। इस प्रकार भली-भाँति अक्षर-ज्ञान हो जाने पर पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ना सहज हो जाता है। साक्षरता के क्रम में भी ऐसे वाक्यों को पढ़ाया जाए जो शिशुओं की नैतिक शिक्षा का भी अंग बन सके। उदाहरण के रूप में मात्राओं का परिचय कराते समय कुछ सरल वाक्य हो सकते हैं— “माता का कहना मान। हाथ साफ कर। अब खाना खा। अधिक बात मत कर। सदा सच बोला।”

आधुनिक विज्ञान ने तो शिशु की क्षमताओं पर भी बहुतायत में शोध किए हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि शिशु में भाषा सीखने की भी अद्भुत क्षमता होती है। वह एक ही समय में चार भाषाओं को, बिना दुविधा में पड़े, बोल-समझ सकता है।¹² हम बालक के सुखी व सफल जीवन की कामना करते हैं तो उसके विकास के प्रथम चरण में ही समुचित शिक्षण आरम्भ करना चाहिए। बालक की असीम क्षमताओं के लिए आंग्लभाषा के कवि सर विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता ‘My Heart Leaps Up’ की एक उक्ति बहु प्रसिद्ध है - “Child is a father of a Man”.

भारतीय परम्परा और शिशु शिक्षण -

भारतीय इतिहास के उज्ज्वलतम चरित्रों में से एक छत्रपति महाराज शिवाजी के विषय में ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध है कि उनके जीवन पर शैशवावस्था से ही माता जीजाबाई से प्राप्त शिक्षा का असीम प्रभाव पड़ा था। पौराणिक गाथा है कि बालक ध्रुव ने अपनी विमाता द्वारा किए गए अपमान से क्षुब्ध होकर तपस्या करने का दृढ़ संकल्प लिया था। निस्संदेह यह ध्रुव की माता सुनीति की ही शिक्षा थी जो पञ्च वर्षीय अल्पायु ध्रुव में भी आत्म-सम्मान की भावना इतनी प्रबल थी।

¹² <https://expatsincebirth.com/2013/08/19/how-many-languages-can-a-child-learn/> (June12,2024)

साहस, निर्णय लेने की क्षमता और समस्याओं से जूझते हुए भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेने का दृढ़ संकल्प – ये सभी गुण बालक ध्रुव में थे।

निष्कर्ष – भारतीय ज्ञान परम्परा में शिशु के शिक्षण के सभी मौलिक तत्त्व उपस्थित हैं। ऐसी कथाओं, गाथाओं एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यों का समावेश करने पर बौद्धिक के साथ-साथ सांस्कृतिक, सामाजिक और कुल-परिवार में पारस्परिक सम्बन्धों में नव-ऊर्जा का संचार होने की सम्भावना बहुत प्रबल है जो प्राचीन काल से हम भारतीयों की विशिष्ट पहचान रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० भारतीय ज्ञान के सूर्य को उदयाचल की ओर ले जाने का प्रयास है। हम सफल रहे तो वह समय दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व-गुरु के उच्चतम स्थान पर पदासीन होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. अथर्ववेद
२. कठोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, छठा संस्करण, संवत्-२००८
३. चाणक्यनीतिः, अनुवादक-शास्त्री सत्यव्रत, भारतीय विद्या मन्दिर, कलकत्ता, २०१३
४. तैत्तिरीयोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, पुनर्मुद्रण संस्करण, संवत्-२०७४
५. मनुस्मृति (कल्याण-कल्पतरु), गीताप्रेस, गोरखपुर, १९९९
६. यजुर्वेद

अन्तर्जाल सन्दर्भ सूची

1. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Human_brain_development_timeline# (June12,2024)
2. <https://expatsincebirth.com/2013/08/19/how-many-languages-can-a-child-learn/> (June12,2024)
3. <https://ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC> (June12,2024)
4. https://www.mhrdeducation.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf (19 JULY 2024) Pg-4
5. <https://testbook.com/question-answer/maximum-development-of-brain-Occur-at-> (6June12,2024)